

Traditional Systems of Indian Medicine: Ayurveda, Siddha, Unani and Homoeopathy

Dr. R.L.S. Sikarwar

AKS. University, Satna (M.P.)- 485001

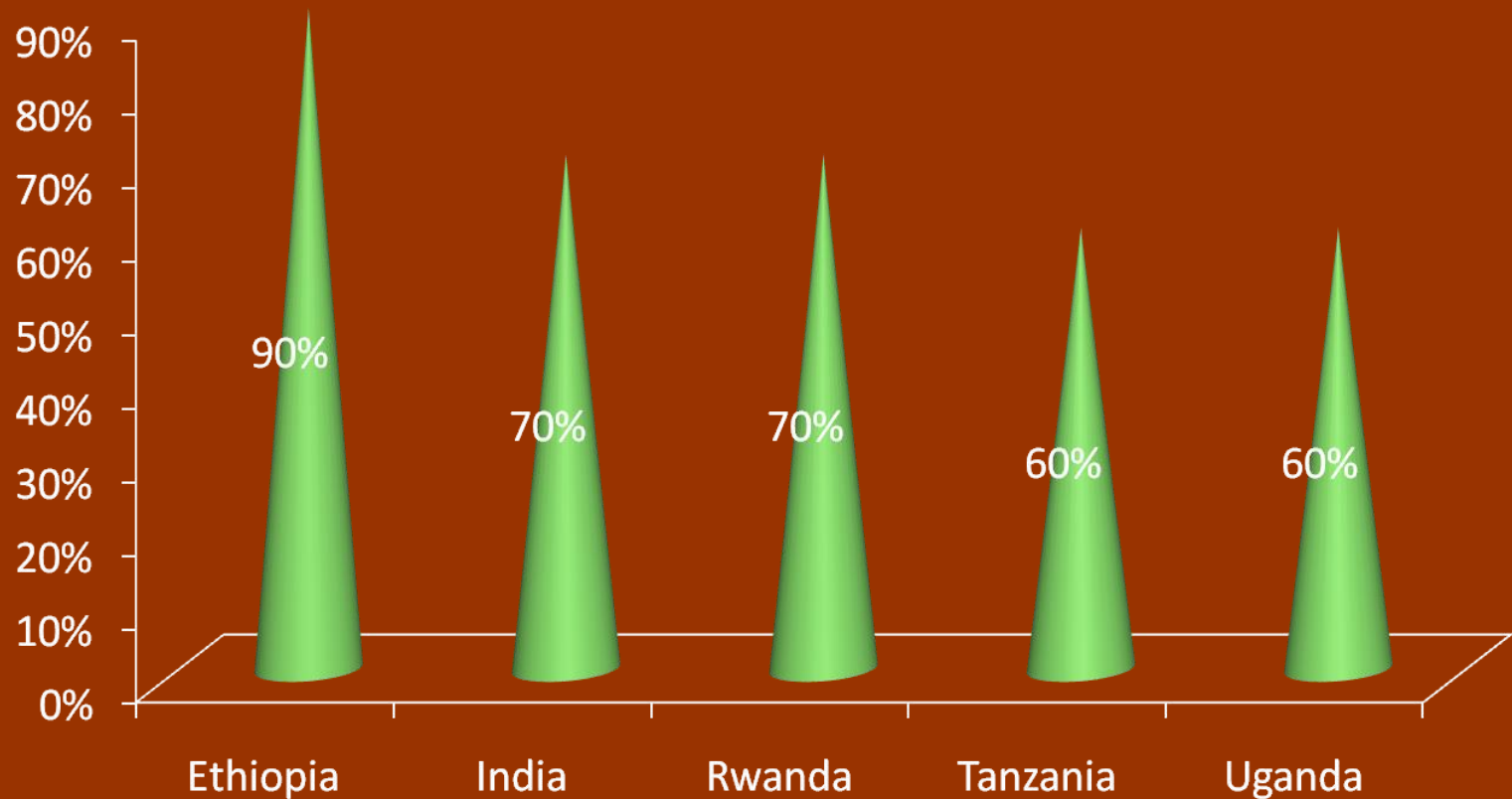
Traditional System of Medicines of the World

- Practices known as traditional medicines include traditional European medicine, traditional Chinese medicine, Traditional Korean medicine, traditional African medicine, Indian traditional system of medicine (Ayurveda, Siddha, Unani), ancient Iranian medicine, Iranian (Persian), Islamic medicine, Muti and Ifa etc.
- पारंपरिक औषधियों के रूप में जानी जाने वाली प्रथाओं में पारंपरिक यूरोपीय चिकित्सा, पारंपरिक चीनी चिकित्सा, पारंपरिक कोरियाई चिकित्सा, पारंपरिक अफ्रीकी चिकित्सा, भारतीय पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली (आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी), प्राचीन ईरानी चिकित्सा, ईरानी (फ़ारसी), इस्लामी चिकित्सा, मुती और इफ़ा शामिल हैं।

Introduction

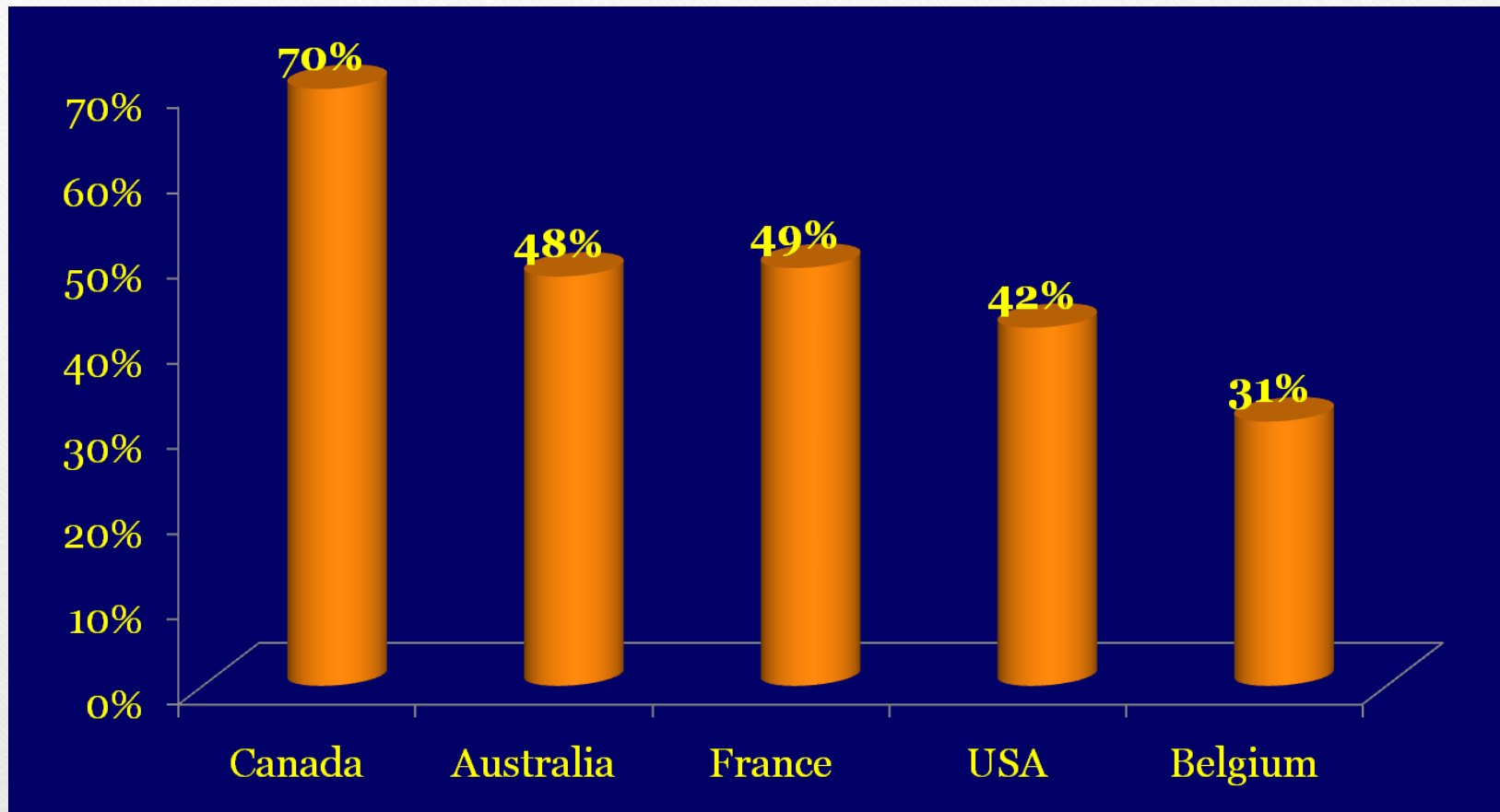
- The WHO estimates that about 80% of the populations living in the developing countries rely exclusively on traditional medicine for their primary health care needs.
- डब्ल्यूएचओ का अनुमान है कि विकासशील देशों में रहने वाली लगभग 80% आबादी अपनी प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल आवश्यकताओं के लिए विशेष रूप से पारंपरिक चिकित्सा पर निर्भर है।
- Almost in all the traditional medicines, the medicinal plants play a crucial role in the traditional medicine. India has a rich heritage of traditional medicine and the traditional health care system have been flourishing for many centuries.
- लगभग सभी पारंपरिक औषधियों में औषधीय पौधे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत में पारंपरिक चिकित्सा की समृद्ध विरासत है और पारंपरिक स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली कई शताब्दियों से फल-फूल रही है।

Global Perspective of Medicinal plants (WHO)



Use of Traditional medicine

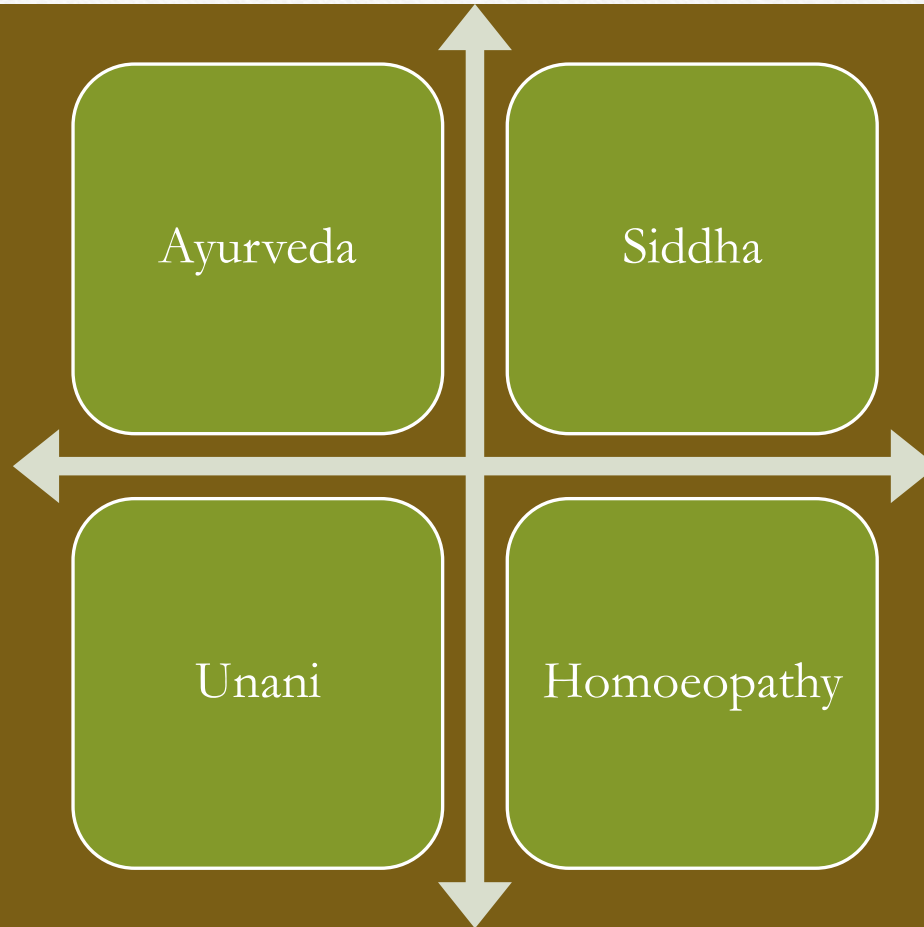
Population in developed countries who used traditional medicine at least once.



Traditional Systems of Indian Medicine

- India has an ancient heritage of traditional medicine. Indian traditional medicine is based on different systems including Ayurveda, Siddha and Unani.
- An indigenous system is a natural form of medicine outside the stream of Western or allopathic medicine practiced by majority of doctors all over the world today. These systems are Ayurveda, siddha, Unani, yoga and homeopathy (AYUSH).
- भारत में पारंपरिक चिकित्सा की प्राचीन विरासत है। भारतीय पारंपरिक चिकित्सा आयुर्वेद, सिद्ध और यूनानी सहित विभिन्न प्रणालियों पर आधारित है।
- स्वदेशी प्रणाली पश्चिमी या एलोपैथिक चिकित्सा पद्धति के बाहर चिकित्सा का एक प्राकृतिक रूप है जिसका अभ्यास आज दुनिया भर के अधिकांश डॉक्टर करते हैं। ये प्रणालियाँ आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी, योग और होम्योपैथी (आयुष) हैं।

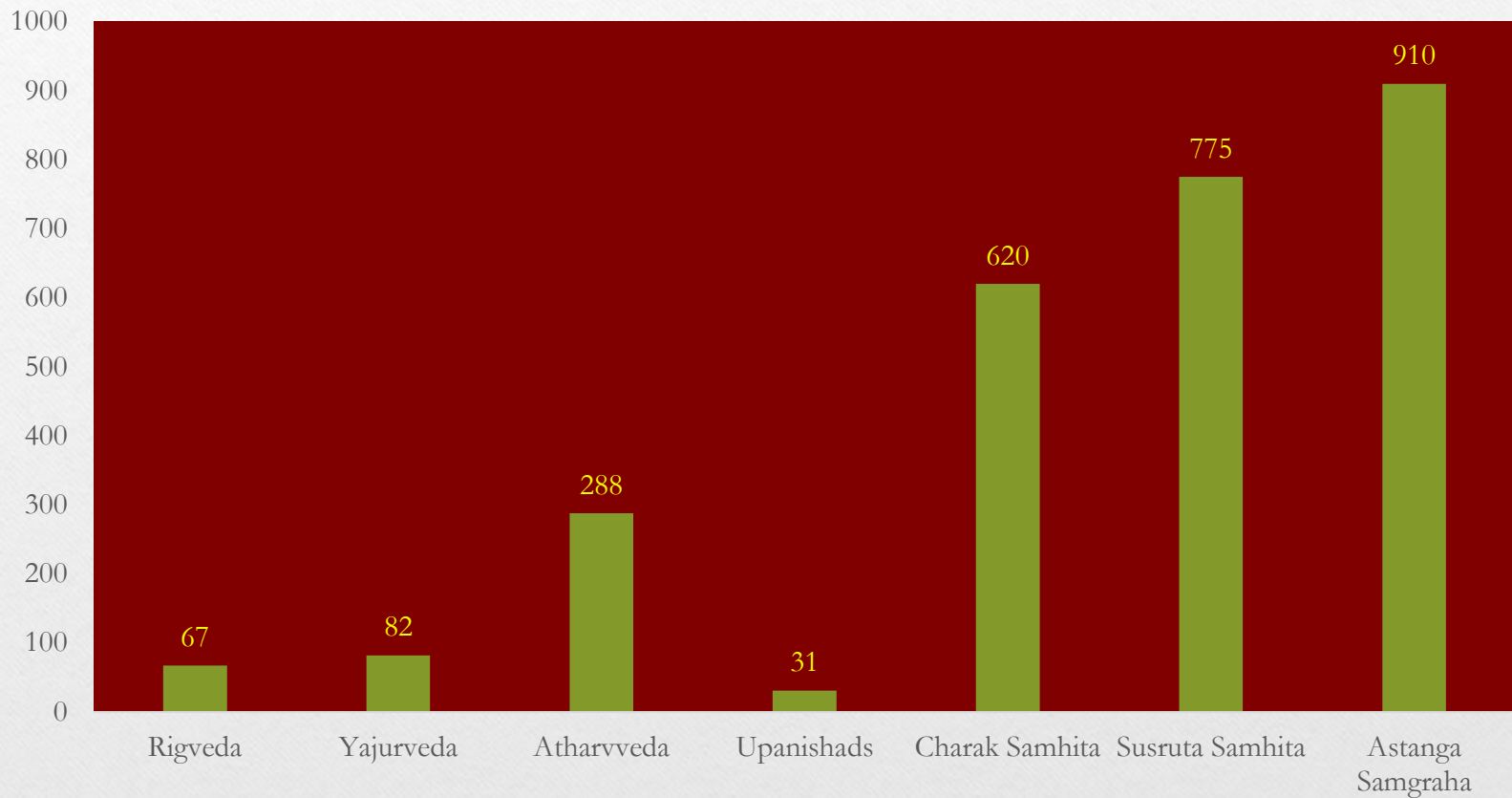
Indian System of Medicines



1. Ayurveda—The Indian System of Medicine

- Ayurvedic system of medicine is accepted as the oldest written medical system that is also supposed to be more effective in certain cases than modern therapies. The origin of Ayurveda in India was held between 2500 and 500 B.C. Ayurveda is accepted to be the oldest medical system, which came into existence in about 900 B.C.
- आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली को सबसे पुरानी लिखित चिकित्सा प्रणाली के रूप में स्वीकार किया जाता है, जिसे कुछ मामलों में आधुनिक उपचारों की तुलना में अधिक प्रभावी माना जाता है। भारत में आयुर्वेद की उत्पत्ति 2500 से 500 ईसा पूर्व के बीच हुई थी। आयुर्वेद को सबसे पुरानी चिकित्सा प्रणाली माना जाता है, जो लगभग 900 ईसा पूर्व अस्तित्व में आई थी।

Medicinal Plants in Ancient Literature



- The word Ayurveda means Ayur meaning life and Veda meaning science. Thus, Ayurveda literally means science of life. The Indian Hindu mythology states four Veda written by the Aryans: Rig Veda, Sam Veda, Yajur Veda and Atharva Veda. The Ayurveda is said to be an Upaveda (part) of Atharva Veda.
- आयुर्वेद शब्द का अर्थ आयु अर्थात् जीवन और वेद का अर्थ विज्ञान है। इस प्रकार, आयुर्वेद का शाब्दिक अर्थ जीवन का विज्ञान है। भारतीय हिंदू पौराणिक कथाओं में आर्यों द्वारा लिखे गए चार वेद बताए गए हैं: ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद। आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपवेद (भाग) कहा जाता है।

- **Charaka Samhita** (1900 B.C.) is the first recorded book with the concept of practice of Ayurveda. This describes 341 plants and plant products used in medicine.
- **Sushruta Samhita** (600 B.C.) was the next ayurvedic literature that has special emphasis on surgery. It described 395 medicinal plants, 57 drugs of animal origin, 4 minerals and metals as therapeutic agents.
- **चरक संहिता** (1900 ईसा पूर्व) आयुर्वेद के अभ्यास की अवधारणा वाली पहली लिखित पुस्तक है। इसमें चिकित्सा में उपयोग किए जाने वाले 620 पौधों और पौधों के उत्पादों का वर्णन है।
- **सुश्रुत संहिता** (600 ईसा पूर्व) अगला आयुर्वेदिक साहित्य था जिसमें सर्जरी पर विशेष जोर दिया गया है। इसमें 775 औषधीय पौधों, पशु मूल की 57 दवाओं, 4 खनिजों और धातुओं को चिकित्सीय एजेंटों के रूप में वर्णित किया गया है।

Definition of Ayurveda

हिता हितं सुखं दुखं आयु तसया हितहितम्!
मन च तच्छ यत्रोक्तं आयुर्वेद स उच्यते !

(C.Su.1/41)

संस्कृत में आयु का अर्थ है जीवन की प्राचीन प्रणाली और वेद का अर्थ है ज्ञान। अतः जीवन की सुखी, दुःखी, स्वस्थ एवं अस्वस्थ स्थिति के ज्ञान को आयुर्वेद कहा जाता है।

The Science which deals with good, bad, happy and unhappy life is known as Ayurveda.

Objectives of Ayurveda

- Ayurveda lays great emphasis on preservation and promotion of health and preventing the occurrence of disease.
- Supreme Scholars of Ayurveda- Charaka and Sushruta have told that-

स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणं,
आतुरस्य विकार प्रशमनं।

(चरक संहिता सूत्र ३०।२६)

i.e. to maintain the positive health of a healthy person and to cure the disease of the patient.

Basic principles of ayurveda

- According to ancient Indian philosophy, the universe is composed of five basic elements or pancha bhutas: prithvi (earth), jal (water), teja (fire), vayu (air) and akash (space).
- प्राचीन भारतीय दर्शन के अनुसार, ब्रह्मांड पांच मूल तत्वों या पंच भूतों से बना है: पृथ्वी (पृथ्वी), जल (जल), तेज (अग्नि), वायु (वायु) और आकाश (अंतरिक्ष)।
- Everything in the universe, including the bodies were derived from these bhutas. A fundamental harmony therefore exists between the macrocosm (the universe) and the microcosm (the individual). The Pancha Bhuta theory and the human body:
- The pancha bhutas are represented in the human body as the doshas, dhatus and malas.
- ब्रह्मांड में शरीर सहित सभी चीजें इन पंच भूतों से उत्पन्न हुई थीं। इसलिए स्थूल जगत (ब्रह्मांड) और सूक्ष्म जगत (व्यक्ति) के बीच एक मौलिक सामंजस्य मौजूद है।
- पंच भूत सिद्धांत और मानव शरीर: पंच भूतों को मानव शरीर में दोष, धातु और मल के रूप में दर्शाया जाता है।

Dhoshas

- There are three doshas in the body. They are vata, pitta and kapha. These three doshas, known as tridoshas. However, the factors responsible for movement and sensation in a single cell/whole body are the representatives of vata; it explains the entire biological phenomena that are controlled by the functions of central and autonomous nervous system.

1. **वात:** शरीर में तीन दोष होते हैं। वे वात, पित्त और कफ हैं। जिन्हें त्रिदोष के नाम से जाना जाता है। हालाँकि, एकल कोशिका/संपूर्ण शरीर में गति और संवेदना के लिए जिम्मेदार कारक वात है; यह संपूर्ण जैविक घटनाओं की व्याख्या करता है जो केंद्रीय और स्वायत्त तंत्रिका तंत्र के कार्यों द्वारा नियंत्रित होती हैं।

2. Pitta: The factors responsible for digestion, metabolism, tissue building, heat production, blood pigmentation, activities of the endocrine glands and energy are the representatives of pitta.

- **पित्त:** पाचन, चयापचय, ऊतक निर्माण, गर्मी उत्पादन, रक्त रंजकता, अंतःस्रावी ग्रंथियों की गतिविधियों और ऊर्जा के लिए जिम्मेदार कारक **पित्त** है।

3. Kapha: The factors responsible for strengthening the stomach and the joints, providing firmness to the limbs, and refreshing the sense organs are the representatives of kapha.

- **कफ:** पेट और जोड़ों को मजबूत करने, अंगों को दृढ़ता प्रदान करने और इंद्रियों को ताज़ा करने के लिए जिम्मेदार कारक **कफ** है।

3 Doshas- Pancha mahabhuta Theory

5 fundamental elements governs three doshas VATA, PITTA, KAPHA,

- PRITHVI (Earth)
- JALA (Water)
- AGNI (Fire)
- VAYU (Air)
- AKASH (Space)



EQUILIBRIUM of 3 DOSHAS makes good health and
DISEQUILIBRIUM of 3 DOSHAS causes HEALTH DISEASE.

Dhatu

- The dhatus are the body constituents and form the basic structure of the body; each one having its own functions. The dhatus are seven in number: rasa (food juices), rakta (haemoglobin portion of the blood), mamsa (muscle tissue), medas (fat tissue), asthi (bone tissue), majja (bone marrow) and shukra (semen).
- धातुएँ शरीर के घटक हैं और शरीर की मूल संरचना बनाती हैं; प्रत्येक के अपने-अपने कार्य हैं। धातुएँ संख्या में सात हैं: रस (भोजन रस), रक्त (रक्त का हीमोग्लोबिन भाग), ममसा (मांसपेशी ऊतक), मेदस (वसा ऊतक), अस्थि (हड्डी ऊतक), मज्जा (अस्थि मज्जा) और शुक्र (वीर्य)। .

Concept of Agni

According to Ayurveda, the Jatharagni (Digestive) is divided into 4 Types of Agni are:

- ***Vishama Agni:*** irregular digestion (erratic)
- ***Tiksna Agni:*** hyper-metabolism (hot & sharp)
- ***Manda Agni:*** hypo-metabolism (slow & heavy)
- ***Sama Agni:*** Samagni ensures complete digestion of the food ingested at the proper time without any irregularity.

आयुर्वेद के अनुसार, जठराग्नि (पाचन) को 4 प्रकार की अग्नि में विभाजित किया गया है:

- विषम अग्नि: अनियमित पाचन (अनियमित)
- तीक्ष्ण अग्नि: अति-चयापचय (गर्म)।
- मंदा अग्नि: हाइपो-मेटाबॉलिज्म (धीमा)।
- साम अग्नि: सामग्नि बिना किसी अनियमितता के उचित समय पर खाए गए भोजन का पूर्ण पाचन सुनिश्चित करती है।

Malas

- Malas are the by-products of the dhatus, partly used by the body and partly excreted as waste matter after the process of digestion is over.
- मल धातु के उप-उत्पाद हैं, जो आंशिक रूप से शरीर द्वारा उपयोग किए जाते हैं और पाचन की प्रक्रिया समाप्त होने के बाद आंशिक रूप से अपशिष्ट पदार्थ के रूप में उत्सर्जित होते हैं।
- The chief malas are mutra (urine), shakrit (faeces) and sweda (perspiration). The doshas, dhatus and malas should be in a state of perfect equilibrium for the body to remain healthy. Any imbalance among these constituents results in ill health and disease.
- प्रमुख मल हैं मूत्र (मूत्र), शकृत (मल) और स्वेद (पसीना)। शरीर के स्वस्थ रहने के लिए दोष, धातु और मल पूर्ण संतुलन की स्थिति में होने चाहिए। इन घटकों के बीच किसी भी असंतुलन के परिणामस्वरूप खराब स्वास्थ्य और बीमारी होती है।

Health

- According to Charak, the sensory and motor organs and mind, atma must be also in a pleasant state. Such a person is called a healthy person or Swastha.
- According to Shushruta:

समदोषः समाग्निश्च समधातु मलक्रियाः।

प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाः स्वस्थः इत्यभिधीयते ॥

(जिस व्यक्ति के दोष (वात, कफ और पित्त) समान हों, अग्नि सम हो, सात धातुयें भी सम हों, तथा मल भी सम हो, शरीर की सभी क्रियायें समान क्रिया करें, इसके अलावा मन, सभी इंद्रियाँ तथा आत्मा प्रसन्न हो, वह मनुष्य स्वस्थ कहलाता है)। यहाँ 'सम' का अर्थ 'संतुलित' (न बहुत अधिक न बहुत कम) है।

- Swasthya = state of being healthy. Good health is that state of equilibrium of the three doshas Vata, Pitta and kapha, where the mind and all the organs of the body work in harmony and the person enjoys peace and happiness and performs his/her duty of life with comfort and ease.

Diagnosis

- In Ayurveda diagnosis is always done of the patient as a whole. The physician takes a careful note of the patients internal physiological characteristics and mental disposition. Studies such other factors as the affected bodily tissues, humours, the site at which the disease is located, patients resistance and vitality, daily routine, dietary habits, the gravity of clinical conditions, condition of digestion and details of personal, social, economic and environmental situation of the patient.
- आयुर्वेद में निदान सदैव रोगी का ही किया जाता है। चिकित्सक रोगी की आंतरिक शारीरिक विशेषताओं और मानसिक स्थिति पर सावधानीपूर्वक ध्यान देता है। प्रभावित शारीरिक ऊतकों, दोष, वह स्थान जहां रोग स्थित है, रोगी की प्रतिरोधक क्षमता और जीवन शक्ति, दैनिक दिनचर्या, आहार संबंधी आदतें, नैदानिक स्थितियों की गंभीरता, पाचन की स्थिति और व्यक्तिगत, सामाजिक, आर्थिक और रोगी की पर्यावरणीय स्थिति के विवरण जैसे अन्य कारकों का अध्ययन किया जाता है।

The diagnosis also involves the following examinations:

1. General physical examination
2. Pulse examination
3. Urine examination
4. Examination of the faeces
5. Examination of tongue and eyes
6. Examination of skin and ear including tactile and auditory functions.

निदान में निम्नलिखित परीक्षाएं भी शामिल हैं:

1. सामान्य शारीरिक परीक्षण
2. नाड़ी परीक्षण
3. मूत्र परीक्षण
4. मल की जांच
5. जीभ और आंखों की जांच
6. स्पर्श और श्रवण कार्यों सहित त्वचा और कान की जांच।

Treatment

- In Ayurveda, before starting the treatment, a person's constitutional type should be determined. Drugs are prescribed based on the patient's body type as well as on what disease or disturbance of the doshas they are suffering from. Everything that might affect the patient's health, including their activities, the time of the day, and the season should be taken into consideration.
- आयुर्वेद में इलाज शुरू करने से पहले व्यक्ति के संवैधानिक प्रकार का निर्धारण करना चाहिए। रोगी के शरीर के प्रकार के साथ-साथ वे किस बीमारी या दोषों की गड़बड़ी से पीड़ित हैं, इसके आधार पर दवाएं निर्धारित की जाती हैं। रोगी के स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाली हर चीज, जिसमें उनकी गतिविधियाँ, दिन का समय और मौसम शामिल हैं, को ध्यान में रखा जाना चाहिए।
- Ayurvedic treatment attempts to establish a balance among the bodily humours of vata, pitta and kapha, as well as to improve digestion and elimination of ama (undigested food).
- आयुर्वेदिक उपचार वात, पित्त और कफ के शारीरिक गुणों के बीच संतुलन स्थापित करने के साथ-साथ पाचन में सुधार और अपचा भोजन को खत्म करने का प्रयास करता है।

Types of Treatment

- Ayurvedic therapy often begins with shodhana (cleansing) in which toxins, emotional or physical, are eliminated or neutralized. Once shodhana is completed, shamana (palliative treatment) is used to reduce the intensity of a disease and balance the disordered doshas. Finally, rasayana (rejuvenation therapy) is used to maintain health and reduce the negative effects of disease.
- आयुर्वेदिक चिकित्सा अक्सर शोधन (सफाई) से शुरू होती है जिसमें भावनात्मक या शारीरिक विषाक्त पदार्थों को समाप्त या बेअसर कर दिया जाता है। एक बार शोधन पूरा हो जाने पर, रोग की तीव्रता को कम करने और अव्यवस्थित दोषों को संतुलित करने के लिए शमन (उपशामक उपचार) का उपयोग किया जाता है। अंत में, रसायन (कायाकल्प चिकित्सा) का उपयोग स्वास्थ्य को बनाए रखने और बीमारी के नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए किया जाता है।
- Rasayana therapy deals with promotion of strength and vitality. The integrity of body matrix, promotion of memory, intelligence, immunity against the disease, the preservation of youth, lustre and complexion and maintenance of optimum strength of the body and senses are some of the positive benefits credited to this treatment.
- रसायन चिकित्सा शक्ति और जीवन शक्ति को बढ़ावा देने से संबंधित है। शरीर की संरचना की अखंडता, स्मृति, बुद्धि, रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ावा देना, यौवन, चमक और रंग को बनाए रखना और शरीर और इंद्रियों की इष्टतम शक्ति को बनाए रखना इस उपचार के कुछ सकारात्मक लाभ हैं।

Pathya Vyavastha (Prescription of diet and activity)

Pathya Vyavastha comprises of diet, activity, habits and emotional status. Emphasis on actions such as dos and donts of diet is laid with the aim to stimulate Agni and optimize digestion and assimilation of food in order to ensure strength of tissues.

पथ्य व्यवस्था (आहार और गतिविधि का नुस्खा)

पथ्य व्यवस्था में आहार, गतिविधि, आदतें और भावनात्मक स्थिति शामिल है। अग्नि को उत्तेजित करने और ऊतकों की ताकत सुनिश्चित करने के लिए भोजन के पाचन और आत्मसात को अनुकूलित करने के उद्देश्य से आहार में क्या करें और क्या न करें जैसे कार्यों पर जोर दिया जाता है।

Nidan Parivarjan (Avoidance of disease causing and aggravating factors)

Nidan Parivarjan is to avoid the known disease-causing factors in diet and lifestyle of the patient.

निदान परिवारजन (बीमारी पैदा करने वाले और बढ़ाने वाले कारकों से बचाव)

निदान परिवर्तन का उद्देश्य रोगी के आहार और जीवनशैली में रोग पैदा करने वाले ज्ञात कारकों से बचना है।

2. Siddha System of Medicine

- Siddha medicine is practiced in Southern India. The origin of the Tamil language is attributed to the sage Agasthya, and the origin of Siddha medicine is also attributed to him. Before the Aryan occupation of the Sind region and the Gangetic plain, there existed in the southern India, on the banks of the river Cauvery and Tamirapani, a civilization which was highly organized.
- सिद्ध चिकित्सा पद्धति दक्षिणी भारत में प्रचलित है। तमिल भाषा की उत्पत्ति का श्रेय ऋषि अगस्त्य को दिया जाता है, और सिद्ध चिकित्सा की उत्पत्ति का श्रेय भी उन्हीं को दिया जाता है। सिंधु क्षेत्र और गंगा के मैदान पर आर्यों के कब्जे से पहले, दक्षिणी भारत में कावेरी और तमीरापानी नदी के तट पर एक सभ्यता मौजूद थी जो अत्यधिक संगठित थी।

This civilization has a system of medicine to deal with problems of sanitation and treatment of diseases. This is the Siddha system of medicine. The therapeutics of Siddha medicines consists mainly of the use of metals and minerals. There is mention of mercury, sulphur, copper, arsenic and gold used as therapeutic agents.

इस सभ्यता में स्वच्छता की समस्याओं से निपटने और रोगों के उपचार के लिए चिकित्सा प्रणाली थी। यह सिद्ध चिकित्सा पद्धति है। सिद्ध औषधियों के उपचार में मुख्य रूप से धातुओं और खनिजों का उपयोग होता है। चिकित्सीय एजेंटों के रूप में उपयोग किए जाने वाले पारा, सल्फर, तांबा, आर्सेनिक और सोने का उल्लेख है।

Principle of Siddha System of medicine

- The universe consists of two essential entities: matter and energy. The Siddhas call them Siva (male) and Shakti (female, creation). Matter cannot exist without energy inherent in it and vice versa. The two coexist and are inseparable.
- ब्रह्मांड में दो आवश्यक इकाइयाँ शामिल हैं: पदार्थ और ऊर्जा। सिद्ध उन्हें शिव (पुरुष) और शक्ति (महिला, सृष्टि) कहते हैं। पदार्थ का अस्तित्व उसमें निहित ऊर्जा के बिना नहीं हो सकता और इसके विपरीत भी। दोनों सह-अस्तित्व में हैं और अविभाज्य हैं।

- They are the primordial elements (bhutas). Their names are munn (solid), neer (fluid), thee (radiance), vayu (gas) and aakasam (ether). These five elements (bhutas) are present in every substance, but in different proportions. Earth, water, fire, air and ether are manifestations of five elements.
- वे आदिम तत्व (भूत) हैं। उनके नाम हैं मुन्न (ठोस), नीर (द्रव), तू (चमक), वायु (गैस) और आकाशम (ईथर)। ये पांच तत्व (भूत) हर पदार्थ में मौजूद होते हैं, लेकिन अलग-अलग अनुपात में। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश पाँच तत्वों की अभिव्यक्तियाँ हैं।
- The human being is made up of these five elements, in different combinations. The physiological function in the body is mediated by three substances (dravyas), which are made up of the five elements. They are vatham, pitham and karpam.
- मनुष्य इन पांच तत्वों से, विभिन्न संयोजनों से बना है। शरीर में शारीरिक क्रिया तीन पदार्थों (द्रव्यों) द्वारा नियंत्रित होती है, जो पांच तत्वों से बने होते हैं। वे वाथम, पिथम और कर्पम हैं।

In each and every cell of the body these three doshas coexist and function harmoniously. The tissues are called dhatus.

1. **Vatham** is formed by aakasam and vayu. Vatham controls the nervous actions such as movement, sensation, etc.
2. **Pitham** is formed by thee and controls the metabolic activity of the body, digestion, assimilation and warmth, etc.
3. **Karpam** is formed by munn and neer and controls stability. When their equilibrium is upset, disease sets in.

शरीर की प्रत्येक कोशिका में ये तीन दोष सह-अस्तित्व में रहते हैं और सामंजस्यपूर्ण रूप से कार्य करते हैं। ऊतकों को धातु कहा जाता है।

1. **वाथम** का निर्माण आकाशम और वायु से होता है। वाथम तंत्रिका क्रियाओं जैसे गति, संवेदना आदि को नियंत्रित करता है।
2. **पिथम** शरीर की चयापचय गतिविधि, पाचन, आत्मसात और गर्मी आदि को नियंत्रित करता है।
3. **कार्पम** मुन्न और नीर से बनता है और स्थिरता को नियंत्रित करता है। जब उनका संतुलन बिगड़ता है, तो बीमारी शुरू हो जाती है।

Tridoshas according to Siddha medicine

The tridoshas are involved in all functions of the body, physical, mental and emotional.

1. **Vatham:** Characteristic is dryness, lightness, coldness and motility. Formed by aakasam and vayu, controls the nervous action that constitute movement, activity, sensation, etc. Vatham predominates in the bone. Vatham predominates in first one-third of life when activities, growth, sharpness of function of sense are greater.

त्रिदोष शरीर के सभी कार्यों, शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक में शामिल होते हैं।

1. **वाथम:** विशेषता सूखापन, हल्कापन, शीतलता और गतिशीलता है। आकाशम और वायु द्वारा निर्मित, तंत्रिका क्रिया को नियंत्रित करता है जो गति, गतिविधि, संवेदना आदि का निर्माण करती है। वाथम हड्डी में प्रबल होता है। वाथम जीवन के पहले एक तिहाई भाग में प्रबल होता है जब गतिविधियाँ, विकास, इंद्रिय के कार्य की तीव्रता अधिक होती है।

2. Pitham: Heat—mover of the nervous force of the body. Formed by thee, controls the metabolic activity of the body, digestion, warmth, lustre, intellect, assimilation, etc. Pitham predominates in the tissue blood. Pitham predominates in the second one third of life.

3. पीथम: ताप-शरीर की तंत्रिका शक्ति को संचालित करने वाला। आपके द्वारा निर्मित, शरीर की चयापचय गतिविधि, पाचन, गर्मी, चमक, बुद्धि, आत्मसात आदि को नियंत्रित करता है। पिथम ऊतक रक्त में प्रबल होता है। जीवन के दूसरे एक तिहाई भाग में पीथम की प्रधानता होती है।

3. Karpam: Smoothness, firmness, viscosity, heaviness. Formed by munn and neer, controls the stability of the body such as strength, potency, smooth working of joints. Karpam predominates in other tissues. Karpam predominates in the last one-third of life. Diminishing activity of various organs and limbs.

2. कर्पम: चिकनापन, दृढ़ता, चिपचिपापन, भारीपन। मुन और नीर द्वारा निर्मित, शरीर की स्थिरता जैसे ताकत, शक्ति, जोड़ों के सुचारू रूप से काम करने को नियंत्रित करता है। कार्पम अन्य ऊतकों में प्रबल होता है। जीवन के अंतिम एक तिहाई भाग में कार्पम की प्रधानता होती है। विभिन्न अंगों और अंगों की सक्रियता कम होना।

Dhatus

- The seven dhatus are as follows: 1. Rasa (lymph). 2. Kurudhi (blood). 3. Tasai (muscle). 4. Kozhuppu (adipose tissue). 5. Elumbu (bone). 6. Majjai (marrow). 7. Sukkilam and artavam (male and female hormones).
- सात धातुएँ इस प्रकार हैं: 1. रस (लसीका)। 2. कुरुधि (रक्त)। 3. तसई (मांसपेशी)। 4. कोझुप्पु (वसा ऊतक)। 5. एलुम्बु (हड्डी)। 6. मज्जाई (मज्जा)। 7. सुक्किलम और अर्तवम (पुरुष और महिला हार्मोन)।

Methods of Treatment

- The correction of the imbalance is made by substituting the drug, which is pre-dominately of the opposite nature. An example of vatham imbalance is cold, dry; thus the treatment will be oily and warmth. For inactivity of limbs, massage and activity are prescribed. If pitham dosha is increased, warmth is produced; to decrease pitham, sandalwood is administered, internally or externally because of its cold characteristics.
- असंतुलन का सुधार दवा के प्रतिस्थापन द्वारा किया जाता है, जो मुख्य रूप से विपरीत प्रकृति की होती है। वाथम असंतुलन का एक उदाहरण ठंडा, शुष्क है; इस प्रकार उपचार तैलीय और गर्म होगा। अंगों की निष्क्रियता के लिए मालिश और क्रियाकलाप निर्धारित हैं। यदि पिथम दोष बढ़ता है, तो गर्मी उत्पन्न होती है; पिथम को कम करने के लिए, चंदन को इसकी ठंडी विशेषताओं के कारण आंतरिक या बाह्य रूप से प्रशासित किया जाता है।

Mercury: Mercury occupies a very high place in Siddha medicine. It is used as a catalytic agent in many of its medicines. When mercury is used, it is used in combination with sulphur. The addition of sulphur is to control the fluidity of mercury—this converts to mercuric sulphite which is insoluble in mineral acids.

पारा: सिद्ध चिकित्सा में पारा का बहुत ऊंचा स्थान है। इसका उपयोग कई दवाओं में उत्प्रेरक एजेंट के रूप में किया जाता है। जब पारा का उपयोग किया जाता है, तो इसका उपयोग सल्फर के साथ संयोजन में किया जाता है। सल्फर मिलाने का उद्देश्य पारे की तरलता को नियंत्रित करना है - यह मर्क्यूरिक सल्फाइड में परिवर्तित हो जाता है जो खनिज एसिड में अघुलनशील होता है।

Siddhas used five forms of mercury:

1. Mercury metal—rasam.
2. Red sulphide of mercury—lingam.
3. Mercury chloride—veeram.
4. Mercury subchloride (mercury chloride)—pooram.
5. Red oxide of mercury—rasa chenduram.

Ordinary rasa chenduram (red oxide of mercury) is a poison, but when processed as poorna chandrodayam according to Siddha practice, it becomes ambrosia.

सिद्ध पारे के पाँच रूपों का उपयोग करते हैं:

1. पारद धातु- रसम।
2. पारे का लाल सल्फाइड- लिंगम।
3. मरकरी क्लोराइड- वीरम।
4. मरकरी सबक्लोराइड (पारा क्लोराइड)- पूरम।
5. पारे का लाल ऑक्साइड - रस चेंदुराम।

साधारण रस चेंदुराम (पारा का लाल ऑक्साइड) एक जहर है, लेकिन जब सिद्ध अभ्यास के अनुसार पूर्ण चंद्रोदयम के रूप में संसाधित किया जाता है, तो यह अमृत बन जाता है।

Sulphur: Calcined sulphur or red oxide of sulphur can be obtained by solidifying it first by the Siddha method of purification. In small doses, it conserves the body, and it is diaphoretic and alterative. Therapeutic ally is used as both external and internal remedy against skin diseases, rheumatic arthritis, asthma, jaundice and blood poisoning.

Arsenic: As per Siddha kalpa, purified and consolidated arsenic is effective against all fevers, asthma and anaemia.

सल्फर: कैल्सीनयुक्त सल्फर या सल्फर के लाल ऑक्साइड को शुद्धिकरण की सिद्ध विधि द्वारा पहले ठोस बनाकर प्राप्त किया जा सकता है। छोटी खुराक में, यह शरीर को संरक्षित करता है, और यह स्फूर्तिदायक और परिवर्तनकारी है। इसका उपयोग त्वचा रोगों, आमवाती गठिया, अस्थमा, पीलिया और रक्त विषाक्तता के खिलाफ बाहरी और आंतरिक दोनों उपचारों के रूप में किया जाता है।

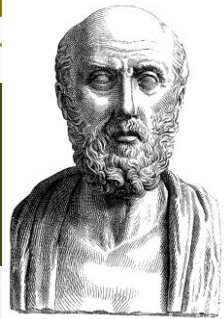
आर्सेनिक: सिद्ध कल्प के अनुसार, शुद्ध और समेकित आर्सेनिक सभी बुखार, अस्थमा और एनीमिया के खिलाफ प्रभावी है।

- **Gold:** It is alterative, nervine tonic, antidote to poison and a powerful sexual stimulant. Very little is absorbed in the system. Care is taken to see that calcinations of gold is freed from metallic state and lustre to ensure safe absorption in the system. Thus, these drugs and metallic minerals are antiviral, immune stimulant and immuno-modulator.
- **सोना:** यह वातनाशक, स्नायु टॉनिक, विष नाशक और शक्तिशाली यौन उत्तेजक है। सिस्टम में बहुत कम अवशोषित होता है। इस बात का ध्यान रखा जाता है कि सिस्टम में सुरक्षित अवशोषण सुनिश्चित करने के लिए सोने की कैल्सीनेशन को धात्विक अवस्था और चमक से मुक्त किया जाए। इस प्रकार, ये दवाएं और धात्विक खनिज एंटीवायरल, प्रतिरक्षा उत्तेजक और इम्यूनो-मॉड्यूलेटर हैं।

The common preparations of Siddha medicines

- The common preparations of Siddha medicines are: 1. Bhasma (Calcined metals and minerals). 2. Churna (powders). 3. Kashaya (decoctions). 4. Lehya (confections). 5. Ghrita (ghee preparations) and taila (oil preparations). 6. Chunna (metallic preparations which become alkaline). 7. Mezhugu (waxy preparations). 8. Kattu (preparation that are impervious to water and flames).
- सिद्ध औषधियों की सामान्य विधियां हैं: 1. भस्म (कैल्सीनयुक्त धातुएं और खनिज)। 2. चूर्ण। 3. कषाय (काढ़ा)। 4. लेहया (मिष्ठान्न)। 5. घृत (घी तैयार करना) और तेल (तेल तैयार करना)। 6. चुन्ना (धात्विक तैयारी जो अल्का-लाइन बन जाती है)। 7. मेझुगु (मौमी तैयारी)। 8. कट्टू (ऐसी तैयारी जो पानी और आग से अप्रभावित हो)।

3. UNANI SYSTEM OF MEDICINE



- Unani system of medicine is originated in Greece by the Greek philosopher, physician Hippocrates (460–377 B.C.), who freed medicine from the realm of superstition and magic, and gave it the status of science.
- यूनानी चिकित्सा पद्धति की उत्पत्ति ग्रीस में यूनानी दार्शनिक, चिकित्सक हिप्पोक्रेट्स (460-377 ईसा पूर्व) द्वारा की गई, जिन्होंने चिकित्सा को अंधविश्वास और जादू के दायरे से मुक्त किया और इसे विज्ञान का दर्जा दिया।

The theoretical framework of Unani medicine is based on the teachings of Hippocrates. After him, a number of other Greek scholars followed the system considerably. Among them Galen (131–212 A.D.) was the one to stabilize its foundation, on which Arab physicians like Raazes (850–925 A.D.) and Avicenna (980–1037 A.D.) constructed an imposing edifice. Unani medicine got its importance among the other systems of traditional medicine in Egypt, Syria, Iraq, Persia, India, China and other Middle East and Far East countries.

यूनानी चिकित्सा का सैद्धांतिक ढाँचा हिप्पोक्रेट्स की शिक्षाओं पर आधारित है। उनके बाद, कई अन्य यूनानी विद्वानों ने इस प्रणाली का काफी हद तक पालन किया। उनमें से गैलेन (131-212 ई.) ने इसकी नींव को स्थिर किया, जिस पर राजेस (850-925 ई.) और एविसेना (980-1037 ई.) जैसे अरब चिकित्सकों ने एक भव्य इमारत का निर्माण किया। मिस्र, सीरिया, इराक, फारस, भारत, चीन और अन्य मध्य पूर्व में पारंपरिक चिकित्सा की अन्य प्रणालियों के बीच यूनानी चिकित्सा को अपना महत्व मिला।

In India, Arabs introduced Unani system of medicine, and soon it enriched in India. When Mongols ravaged Persian and central Asian cities, scholars and physicians of Unani medicine fled to India. The Delhi Sultans, the Khiljis, the Tughlaqs and the Mughal Emperors provided state patronage to the scholars and even enrolled some as state employees and court physicians. During the 13th and 17th century, Unani medicine was firmly rooted in India by Abu Bakr Bin Ali Usman Kasahani, Sadruddin Damashqui, Bahwabin Khwas Khan, Ali Geelani, Akabl Arzani and Mohammad Hoshim Alvi Khan.

भारत में, अरबों ने यूनानी चिकित्सा पद्धति शुरू की और जल्द ही यह भारत में समृद्ध हो गई। जब मंगोलों ने फ़ारसी और मध्य एशियाई शहरों को तबाह कर दिया, तो यूनानी चिकित्सा के विद्वान और चिकित्सक भारत भाग गए। दिल्ली के सुल्तानों, खिलजी, तुगलक और मुगल सम्राटों ने विद्वानों को राजकीय संरक्षण प्रदान किया और कुछ को राज्य कर्मचारियों और दरबारी चिकित्सकों के रूप में नामांकित भी किया। 13वीं और 17वीं शताब्दी के दौरान, अबू बक्र बिन अली उस्मान कसाहानी, सदरुद्दीन दमिश्क द्वारा यूनानी चिकित्सा की जड़ें भारत में मजबूती से स्थापित की गईं।

Unani considers the human body to be made up of seven components. Arkan (elements), mizaj (temperaments), aklath (humours), anza (organs), arawh (spirits), Quo (faculties) and afal (functions), each of which has close relation to the state of health of an individual. A physician takes into account all these factors before diagnosing and prescribing treatment.

यूनानी मानव शरीर को सात घटकों से बना मानते हैं। अर्कान (तत्व), मिजाज (स्वभाव), अक्लथ (दोष), अंजा (अंग), अराव (आत्माएं), क्वो (संकायें) और अफाल (कार्य), जिनमें से प्रत्येक का किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य की स्थिति से घनिष्ठ संबंध है। एक चिकित्सक निदान करने और उपचार निर्धारित करने से पहले इन सभी कारकों को ध्यान में रखता है।

Basic Principles

- According to Basic Principles of Unani, the body is made up of the four basic elements, i.e. Earth, Air, Water and Fire, which have different Temperaments, i.e. Cold, Hot, Wet and Dry. After mixing and interaction of four elements, a new compound having new temperament comes into existence, i.e. Hot Wet, Hot Dry, Cold Wet and Cold Dry.
- यूनानी के मूल सिद्धांतों के अनुसार, शरीर चार मूल तत्वों यानी पृथ्वी, वायु, जल और अग्नि से बना है, जिनका अलग-अलग तापमान यानी ठंडा, गर्म, गीला और सूखा होता है। चार तत्वों के मिश्रण और परस्पर क्रिया के बाद, नए स्वभाव वाला एक नया यौगिक अस्तित्व में आता है, अर्थात् गर्म गीला, गर्म सूखा, ठंडा गीला और ठंडा सूखा।

- The body has the simple and compound organs, which got their nourishment through four humours, i.e. blood, phlegm, yellow bile and black bile. The humour also assigned temperament as blood is, i.e. hot and wet; Phlegm is cold and hot, yellow bile is hot and dry and black bile is cold and dry.
- शरीर में सरल और मिश्रित अंग होते हैं, जिनका पोषण चार द्रव्यों यानी रक्त, कफ, पीला पित्त और काला पित्त से होता है। हास्य ने स्वभाव को भी रक्त जैसा ही बताया है, यानी गर्म और गीला; कफ ठंडा और गर्म होता है, पीला पित्त गर्म और सूखा होता है और काला पित्त ठंडा और सूखा होता है।
- Health is a state of body in which there is equilibrium in the humours and functions of the body are normal in accordance to its own temperament and the environment.
- स्वास्थ्य शरीर की वह अवस्था है जिसमें हास्य में संतुलन होता है और शरीर के कार्य उसके स्वभाव और वातावरण के अनुसार सामान्य होते हैं।

When the equilibrium of the humours is disturbed and functions of the body are abnormal, in accordance to its own temperament and environment, that state is called disease.

जब शरीर में हास्य का संतुलन बिगड़ जाता है और शरीर की कार्यप्रणाली अपने स्वभाव और वातावरण के अनुसार असामान्य हो जाती है तो उस स्थिति को रोग कहा जाता है।

Unani medicine believes in promotion of health, prevention of diseases and cure. Health of human is based on the six essentials (Asbabe Sitta Zaroorya), if these are followed health is maintained; otherwise, there will be diseases. Six essentials are atmospheric air, drinks and food, sleep and wakefulness, excretion and retention, physical activity and rest and mental activity and rest.

यूनानी चिकित्सा पद्धति स्वास्थ्य को बढ़ावा देने, बीमारियों की रोकथाम और इलाज में विश्वास करती है। मानव का स्वास्थ्य छह आवश्यक बातों (असबाबे सिट्टा जरूरी) पर आधारित है, यदि इनका पालन किया जाए तो स्वास्थ्य बना रहता है; नहीं तो बीमारियाँ होंगी। छह आवश्यक चीजें हैं वायुमंडलीय वायु, पेय और भोजन, नींद और जागना, उत्सर्जन और प्रतिधारण, शारीरिक गतिविधि और आराम और मानसिक गतिविधि और आराम।

Diagnosis

- Diseases are mainly diagnosed with the help of pulse (nabz), physical examination of the urine and stool. Also, patients are examined systematically to make the diagnosis easy as spot diagnosis with the help of simple, modern gadgets.
- रोगों का निदान मुख्य रूप से नाड़ी (नाब्ज़), मूत्र और मल की शारीरिक जांच की सहायता से किया जाता है। इसके अलावा, सरल, आधुनिक गैजेट्स की मदद से स्पॉट डायग्नोसिस के रूप में निदान को आसान बनाने के लिए मरीजों की व्यवस्थित रूप से जांच की जाती है।

Treatment

Diseases are treated in the following ways:

- 1. Ilajbil Tadbeer (Regimental Therapy): Some drugless regimens are advised for the treatment of certain ailments, i.e. exercise, massage, hamam (Turkish bath), Douches (Cold and Hot) and the Regimen for Geriatrics.
 - 2. Ilajbil Ghiza (Dietotherapy): Different diets are recommended for the patients of different diseases.
1. इलाजबिल तदबीर (रेजिमेंटल थेरेपी): कुछ बीमारियों के इलाज के लिए कुछ दवा रहित आहार की सलाह दी जाती है, जैसे व्यायाम, मालिश, हमाम (तुर्की स्नान), डूश (ठंडा और गर्म) और जराचिकित्सा के लिए आहार।
 2. इलाजबिल गिज़ा (डाइटोथेरेपी): विभिन्न रोगों के रोगियों के लिए अलग-अलग आहार की सिफारिश की जाती है।

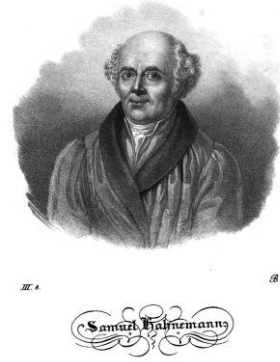
3. Ilajbil Dava (Pharmaco therapy): The basic concept of treatment is to correct the cause of the disease that may be abnormal temperament due to:
Envirnmental factors · Abnormal humours either due to internal causes or external causes which may be pathogenic microorganism, through (a) drugs of opposite temperament to the temperament of the disease that is called Ilaj-bil-zid or (b) drugs of similar temperament as of the temperament of the disease that is called as Ilaj-bil-misl.

3. इलाजबिल दावा (फार्माको थेरेपी): उपचार की मूल अवधारणा उस बीमारी के कारण को ठीक करना है जो निम्न कारणों से असामान्य स्वभाव की हो सकती है:
- पर्यावरणीय कारक · असामान्य हास्य या तो आंतरिक कारणों या बाहरी कारणों से होता है जो रोगजनक सूक्ष्मजीव हो सकता है, (ए) रोग के स्वभाव के विपरीत स्वभाव की दवाओं के माध्यम से जिसे इलाज-बिल-ज़िड कहा जाता है या (बी) समान स्वभाव की दवाओं के माध्यम से बीमारी के स्वभाव का जिसे इलाज़-बिल-मिस्ल कहा जाता है

4. **Ilajbil Yad** (Surgery). The drugs used are mostly of the plant origin. Some drugs of animal and mineral origin are also used. Patients are treated either by single drug (crude drugs) or by com-pound drugs (formulations of single drugs).

4. इलाजबिल याद (सर्जरी)- उपयोग की जाने वाली औषधियाँ अधिकतर पौधों से प्राप्त होती हैं। पशु और खनिज मूल की कुछ दवाओं का भी उपयोग किया जाता है। मरीजों का इलाज या तो एकल दवा (कच्ची दवाएं) या कॉम-पाउंड दवाओं (एकल दवाओं के फॉर्मूलेशन) द्वारा किया जाता है।

4. HOMEOPATHIC SYSTEM OF MEDICINE



- Homoeopathy is a specialized system of therapeutics, developed by Dr Samuel Christian Friedrich Hahnemann (1755–1843), a German physician, chemist and a pharmacist, based on natural law of healing: Similia Similibus Curantur, which means 'Likes are cured by likes'.
- होम्योपैथी चिकित्सा विज्ञान की एक विशेष प्रणाली है, जो एक जर्मन चिकित्सक, रसायनज्ञ और फार्मासिस्ट डॉ. सैमुअल क्रिश्चियन फ्रेडरिक हैनिमैन (1755-1843) द्वारा विकसित की गई है, जो उपचार के प्राकृतिक नियम पर आधारित है: सिमिलिया सिमिलिबस क्यूरंटूर, जिसका अर्थ है 'पसंद को पसंद से ठीक किया जाता है' .

- **Homois** means like (similar) and pathos means treatment. Thus, Homoeopathy is a system of treating diseases or that possess power of producing similar diseases in healthy human beings.
- This law of similar for curing diseases has being in use since the time of Hippocrates, father of medicine. But it was Dr Hahnemann who developed it in to a complete system of therapeutics enunciating the law and its application in 1810.
- होमोइस का अर्थ है समान (समान) और पाथोस का अर्थ है उपचार। इस प्रकार, होम्योपैथी उन रोगों के इलाज की एक प्रणाली है जो स्वस्थ मनुष्यों में समान रोग पैदा करने की शक्ति रखती है जिसके अनुसार औषधियाँ उन रोगों से मिलते जुलते रोग दूर कर सकती हैं, जिन्हें वे उत्पन्न कर सकती हैं।
- रोगों को ठीक करने का यह नियम चिकित्सा के जनक हिप्पोक्रेट्स के समय से ही प्रयोग में आ रहा है। लेकिन यह डॉ. हैनिमैन ही थे जिन्होंने 1810 में कानून और इसके अनुप्रयोग को प्रतिपादित करते हुए चिकित्सीय विज्ञान की एक संपूर्ण प्रणाली के रूप में इसे विकसित किया।

Fundamental Principles of Homoeopathy

- Homoeopathy as a science of medical treatment has a philosophy of its own, and its therapeutics is based on certain fundamental principles that are quite distinct and different from those of other school of medical science. These fundamental principles were discussed by Hahnemann in different sections of his medicine and philosophy.
- चिकित्सा उपचार के विज्ञान के रूप में होम्योपैथी का अपना एक दर्शन है, और इसका उपचार कुछ मौलिक सिद्धांतों पर आधारित है जो अन्य पारंपरिक प्रणालियों से काफी अलग और अलग हैं। इन मौलिक सिद्धांतों की चर्चा हैनिमैन ने अपनी चिकित्सा और दर्शन के विभिन्न अनुभागों में की है।

They are as follows:

1. Law of Similia.
2. Law of Simplex.
3. Law of minimum.
4. Drug proving.
5. Drug dynamization or potentization.
6. Vital force.
7. Acute and Chronic Diseases.
8. Individualization.
9. Direction of cure.

वे इस प्रकार हैं: 1. सिमिलिया का नियम. 2. सिम्पलेक्स का नियम. 3. न्यूनतम का नियम. 4. औषध सिद्ध करना। 5. औषध गतिशीलता या शक्तिकरण। 6. प्राणशक्ति। 7. तीव्र और जीर्ण रोग. 8. वैयक्तिकरण. 9. इलाज की दिशा.

1. Law of similia

The therapeutic law on which homoeopathy is based is Similia Similibus Curentur, which means 'Let likes be cured by likes'. In this art of healing, the medicine administered to a diseased individual is such that if given to a healthy person it produces same sufferings (diseases) as found in the diseased individual. Thus, the symptoms of the diseased individual are to be matched with the pathogenesis of the medicine, and the medicines which are most similar, viz. Simillimum is selected and administered with certainty to cure.

1. सिमिलिया का नियम

जिस चिकित्सीय नियम पर होम्योपैथी आधारित है वह सिमिलिया सिमिलिबस क्युरेंटूर है, जिसका अर्थ है 'पसंद को पसंद से ठीक किया जाए'। उपचार की इस कला में, रोगग्रस्त व्यक्ति को दी जाने वाली औषधि ऐसी होती है कि यदि स्वस्थ व्यक्ति को दी जाए तो वह वही कष्ट (बीमारियाँ) उत्पन्न करती है जो रोगग्रस्त व्यक्ति में पाई जाती हैं। इस प्रकार, रोगग्रस्त व्यक्ति के लक्षणों का दवा के रोगजनन और उन दवाओं से मिलान किया जाना चाहिए जो सबसे अधिक समान हैं। सिमिलिमम का चयन किया गया है और व्यवस्थापक है

2. Law of simplex

Simple and single drugs should be prescribed at a time. Thus, medicines are proved on healthy human beings singly and in simple form without admixture of any other substance.

3. **Law of minimum** Drugs are administered in a minimum quantity because of hypersensitivity in disease and the action of drug is always directed towards normal by virtue of altered receptivity of tissue to stimuli in disease.

The medicines are just required to arouse a reaction in the body. If they are given in large doses, they cause physiological action producing unwanted side effects and organic damage. The minutest quantity of medicine helps it to reach the disease, which is of very subtle in nature. The curative action of drug can only be expected without any unwanted aggravation by using minimum quantity of medicine.

2. सिम्पलेक्स का नियम

एक समय में सरल और एकल औषधियाँ निर्धारित की जानी चाहिए। इस प्रकार, औषधियाँ किसी भी अन्य पदार्थ के मिश्रण के बिना अकेले और सरल रूप में स्वस्थ मनुष्यों पर सिद्ध होती हैं।

3. न्यूनतम का नियम

रोग में अतिसंवेदनशीलता के कारण दवाओं को न्यूनतम मात्रा में प्रशासित किया जाता है और रोग में उत्तेजनाओं के प्रति ऊतकों की परिवर्तित ग्रहणशीलता के कारण दवा की क्रिया हमेशा सामान्य की ओर निर्देशित होती है।

4. दवाओं की जरूरत सिर्फ शरीर में प्रतिक्रिया जगाने के लिए होती है। यदि उन्हें बड़ी मात्रा में दिया जाता है, तो वे अवांछित दुष्प्रभाव और जैविक क्षति पैदा करते हुए शारीरिक क्रिया का कारण बनते हैं। औषधि की सूक्ष्मतम मात्रा उस रोग तक पहुंचने में सहायता करती है, जो अत्यंत सूक्ष्म प्रकृति का होता है। दवा की न्यूनतम मात्रा के उपयोग से ही बिना किसी अवांछित वृद्धि के दवा के उपचारात्मक प्रभाव की उम्मीद की जा सकती है।

4. Drug Providing- To apply drugs for therapeutic purposes, their curative power should be known. The curative power of a drug is its ability to produce disease symptoms when employed on a healthy person. The curative power of a drug is known by its pathogenesis and is ascertained by proving the drug singly on healthy human being. This serves the only true record of the curative properties of drug.

- औषध सिद्ध करना- चिकित्सीय प्रयोजनों के लिए औषधियों का प्रयोग करने के लिए उनकी उपचारात्मक शक्ति ज्ञात होनी चाहिए। किसी दवा की उपचारात्मक शक्ति उसकी स्वस्थ व्यक्ति पर प्रयोग करने पर रोग के लक्षण उत्पन्न करने की क्षमता होती है। किसी औषधि की उपचारात्मक शक्ति उसके रोगजनन से ज्ञात होती है और औषधि को स्वस्थ मनुष्य पर अकेले सिद्ध करने से पता चलती है। यह दवा के उपचारात्मक गुणों का एकमात्र सच्चा रिकॉर्ड प्रस्तुत करता है



Thank You

